MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - I

Time : 3 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 100**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **(8)**

(1) किसने, किससे कहा ? **1**

(i) ज्ञान सिंह ने करामत अली से कहा।

(ii) करामत अली ने ज्ञान सिंह से कहा।

(2) (i) उत्तर लिखिए। **2**

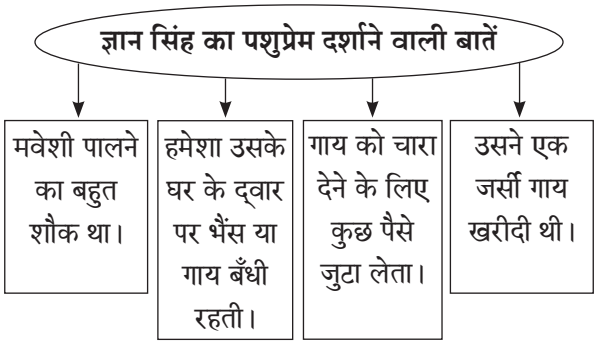

(ii) **गलत वाक्य सही करके लिखिए।** **1**

(1) करामत अली पिछले एक साल से गाय की सेवा करता चला आ रहा था।

(2) करामत अली को लक्ष्मी की पीठ पर रोगन लगाने के बाद भी इत्मीनान नहीं हुआ।

(3) (i) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए। **1**

(1) जिज्ञासा (2) अधेड़

(ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए। **1**

(1) स्थिर × अस्थिर (2) आजाद × गुलाम

(4) पालतू जानवरों का हमें ठीक से ध्यान रखना चाहिए और उनकी सेवा करनी चाहिए। पालतू जानवर चाहे गाय या भैंस हों या फिर कुत्ता या बिल्ली हों, वे बचपन से ही अपने घर पर रहते हैं। हमें उन्हें ठीक से दिन में दो वक्त खाना देना चाहिए। कुत्ते, बिल्ली को रोटी व दूध देना चाहिए। उन्हें समय-समय पर **2**

डॉक्टर के पास ले जाकर इंजेक्शन दिलवाना चाहिए; ताकि उन्हें किसी प्रकार की बीमारी न हो। गाय या बैल को पर्याप्त मात्रा में खाने के लिए चारा देना चाहिए। उन्हें जिस जगह पर रखा जाए, उस जगह को दिन में एक या दो बार साफ करना चाहिए। इस प्रकार हमें पालतू जानवरों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

उ.1. (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **(8)**

(1) कृति पूर्ण कीजिए। **2**

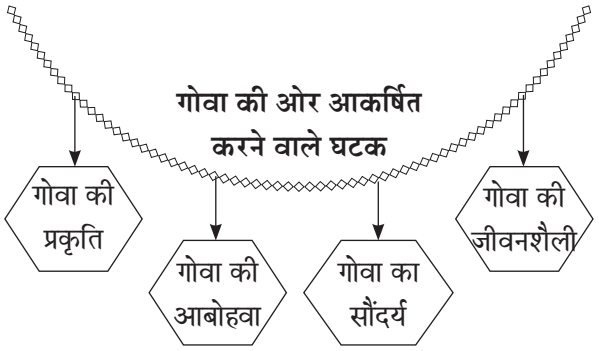

(2) (i) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों - **1**

(1) गोवा एक्सप्रेस कहाँ रुकी ?

(2) गोवा की यात्रा करने के लिए लेखक के साथ कौन सपरिवार शामिल हो गए ?

(ii) सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए। **1**

(1) असत्य (2) सत्य

(3) (i) मानक वर्तनी के अनुसार शब्द शुद्ध कीजिए। **1**

(1) खींचा (2) पर्यटन

(ii) नीचे दिए हुए शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर शब्द-निर्माण कीजिए। **1**

(1) **प्रत्यय** : इक : **शब्द** : शारीरिक

(2) **प्रत्यय** : मय : **शब्द** : आनंदमय

(4) जी हाँ, पर्यटन का अपना ही आनंद होता है। पर्यटन से व्यक्ति को नए-नए स्थान एवं उस स्थान की विशेषता के बारे में पता चलता है। व्यक्ति पर्यटन से संबंधित प्रदेश की प्रकृति, आबोहवा और जीवनशैली से परिचित होता है। नए माहौल में आने के कारण उसका मन तरंगायित हो उठता है। बदले हुए वातावरण के कारण व्यक्ति का मन तरोताजा हो जाता है। उसे अपनी सारी समस्याओं से कुछ पलों के लिए निजात मिलती है। **2**

उ.1.	**(ग) अपठित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(8)**
(1)	**(i) कृति पूर्ण कीजिए।**	**1**

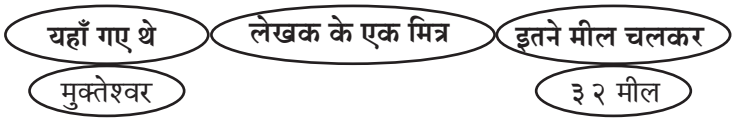

	(ii) उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।	**1**
	(1) चाय - बगीचे के मैनेजर ने क्या बनवाकर मँगाई ?	
	(2) कैमरा - सूरज डूब जाने से क्या बेकार हो गया ?	
(2)	**आकृति पूर्ण कीजिए।**	**2**

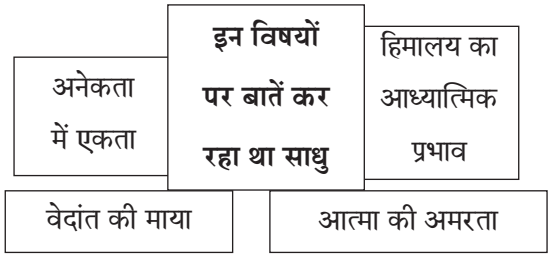

(3)	**(i) निम्नलिखित शब्दों को मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।**	**1**
	(1) शुध्द - शुद्ध (2) चिरपरिचित - चिर-परिचित	
	(ii) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।	**1**
	(1) आय × व्यय (2) प्रभाव × कुप्रभाव	
(4)	हमारे देश विशाल है । हमारे देश में विविधता अनेक रूपों में देखते को मिलती है । यहाँ अनेक प्रांत हैं । हर प्रांत की अपनी भाषा, अपनी वेशभूषा, अपने रीति-रिवाज और अपना खान-पान है। हमारे देश में अनेक धर्म, जातियाँ और सबके अलग-अलग त्यौहार भी हैं। हम भारतवासी होली, दीपावली, ईद, क्रिसमस, महावीर जयंती आदि त्यौहार मनाते हैं । फिर भी हम सब भारतीय संस्कृति के धागे में बँधे हुए हैं । यही अनेकता में एकता हमारी विशिष्टता है ।	**2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2.	**(च) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(6)**
(1)	**(i) एक वाक्य में उत्तर लिखिए।**	**1**
	(1) अतिथि हमारे लिए सदैव देव हैं।	
	(2) भारतवासी आर्यों की संतान हैं।	

(2) कृति पूर्ण कीजिए। **2**

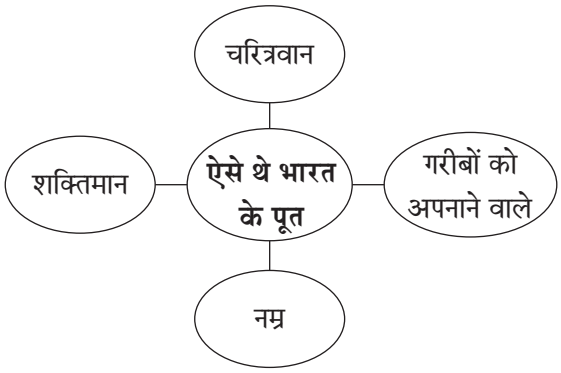

(3) निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए। **2**

कवि प्रसाद जी कहते हैं कि आज हम सभी भारतवासी देश के गौरव एवं उसकी अस्मिता को बरकरार रखने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। हमें इसके लिए ही जीना चाहिए और बड़ी खुशी के साथ हमें इस बात का अभिमान होना चाहिए। इस पवित्र-पावन एवं गौरवशाली भूमि पर अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए हम सदैव तत्पर हैं। आखिर यह हमारा प्यारा भारतवर्ष जिसके लिए हम अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए उत्सुक हैं।

उ.2. (छ) निम्न मुद्दों के आधार पर निम्न कविता का पद्य विश्लेषण कीजिए: **(6)**

(i) **गिरिधर नागर**

(1) **रचनाकार का नाम:** मीराबाई **1**

(2) **रचना का प्रकार** : पद **1**

(3) **पसंदीदा पंक्ति** : हरि बिन कूण गती मेरी।। **1**
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये मैं रावरी चेरी।।
आदि-अंत निज नाँव तेरो हीमायें फेरी।
बेर-बेर पुकार कहूँ प्रभु आरति है तेरी।।

(4) **पसंदीदा होने का कारण:** उपर्युक्त पंक्ति में कवयित्री मीराबाई ने कृष्ण के प्रति समर्पण की भावना को दर्शाया है उन्होंने कहा है कि कृष्ण हमारे पालनकर्ता और मै उनकी दासी हूँ। मैं जीवन के अंतकाल तक आपका नाम जपती रहूँगी। इसलिए यह पंक्ति मुझे बेहद पसंद है। **2**

(5) **कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा:** इस पंक्ति से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि ईश्वर ही हम सब के पालनहार है। उनके बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। हम सुख के समय ईश्वर को भूल जाते हैं और जब हमारे ऊपर दु:ख आता है तब हम ईश्वर को पुकारने लगते हैं। जबकि हमें हर परिस्थिति में ईश्वर को याद करते रहना चाहिए। **1**

	अथवा	
(ii)	**गजल**	
	(1) **रचनाकार कवि का नाम -** माणिक वर्मा	**1**
	(2) **रचना का प्रकार -** गजल	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति -** कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में, मैं जिसे देखूँ उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो।	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण -** गजलकार कहते हैं कि दुनिया की इस भीड़ में कोई ऐसी शक्ल देखने के लिए मिल जाए, जिसे वह देखता है अर्थात् दुनिया की भीड़ में कोई अच्छा व्यक्ति कर्म के लिए आगे आए और सभी लोग उसकी प्रेरणा लेकर आगे आए । इस पंक्ति में कवि ने मानवता का सुंदर वर्णन किया है इसलिए यह पंक्ति मुझे बहुत पसंद है ।	**2**
(5)	**रचना से प्राप्त प्रेरणा -** इस गजल से हमें यह प्राप्त होता है कि अपने रंग-रूप से सुंदर दिखने के बजाय अपने कर्मों से सुंदर दिखना आवश्यक है ।	**1**
उ.2.	**(ज) अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(6)**
(1)	**उत्तर लिखिए।**	**2**
	(i) किसी से काम करवाने के लिए उपयुक्त - स्नेह	
	(ii) हर समय अच्छी लगने वाली बातें - प्यार	
(2)	**आकृति में उत्तर लिखिए।**	**2**
	(i) अच्छा प्रयत्न यही है - जो गिरे हुए को उठा सके	
	(ii) यही अधोगति है - जो प्यार से किसी को उठा न पाए।	
(3)	**निम्नलिखित पठित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।**	**2**
	कवि भवानी प्रसाद मिश्र प्रेम की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि प्रेम द्वारा असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है। हमारे जीवन में यदि अंधकार और नकारात्मक भाव हो, तो प्रेम के द्वारा उसे प्रकाशित किया जा सकता है। सकारात्मकता का भाव जाग सकता है। उसी प्रकार बाहरी समाज में निहित द्वेष, ईर्ष्या व नकारात्मकता को प्रेम के द्वारा सद्मार्ग पर लाया जा सकता है। कवि के मतानुसार प्रेम जीवन में सरलता, सहृदयता व मानवता का प्रतीक है।	
	विभाग 3 - पूरक पठन	
उ.3.	**(अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।**	**(4)**
(1)	**(i) समझकर लिखिए।**	**1**
	(1) सहज और खुले ढंग से।	
	(2) जो चीजों को लुका-छिपाकर, बातों को रचा-बसाकर जीना पसंद करते हैं।	

(ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

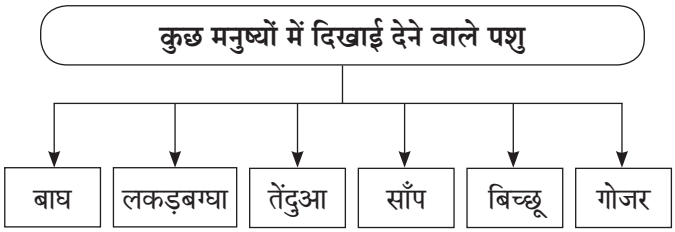

(2) मनुष्य सभी जीवों से श्रेष्ठ है। उसके जीवन की सार्थकता मनुष्य बनने में ही है। वही मनुष्य होता है, जो मनुष्यता का पालन करता है। कभी-कभी मनुष्य जानवरों से भी बदतर अथवा बुरा काम करता है। वह हैवान बन जाता है। ऐसा करने से वह मनुष्य कहलाने के लायक ही नहीं रहता। उसका जीवन निरर्थक हो जाता है। मनुष्य को ऐसा नहीं करना चाहिए। उसे मनुष्य-धर्म का पालन करना चाहिए। मनुष्य-धर्म का पालन करने से उसमें मानवीय मूल्यों का संचार होता है और वह श्रेष्ठतम कार्य करके समाज के सामने एक मिसाल कायम कर देता है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी उसे सभी याद करते हैं। वह अमर हो जाता है। इसलिए मनुष्य जीवन की सार्थकता मनुष्य बनने में ही है। **2**

उ.3. (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(1) (i) **उचित जोड़ियाँ मिलाइए।** **1**

(i - ग), (ii - क), (iii - ख)

(ii) **समझकर लिखिए।** **1**

(1) घना अंधेरा चमकता प्रकाश और अधिक।

(2) करते जाओ पाने की मत सोचो जीवन सारा।

(2) प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कर्मशील रहना चाहिए। कर्म करने से व्यक्ति को मनचाहा फल अपने आप प्राप्त हो जाता है। जो मनुष्य कर्म पर आस्था रखता है, वह कर्मशील कहलाता है। हमें अपना काम तन्मयता व एकाग्रता से करना चाहिए। कर्म करने से ही मनुष्य संपत्ति, यश व वैभव पा सकता है। समाज में प्रतिष्ठित व उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की जीवन शैली का अध्ययन करें, तो उनकी सफलता के पीछे उनके अनवरत संघर्ष एवं परिश्रम के होने का पता चलता है। वे अपने कर्म के कारण ही महान बनते हैं। इसलिए कहा गया है - 'कर्म ही पूजा है।' **2**

विभाग 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(1) (i) **निम्नलिखित वाक्य में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए।** **1**

गोवा : व्यक्तिवाचक संज्ञा तरंगायित - भाववाचक संज्ञा

(ii) **निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम का प्रयोग कीजिए।** **1**

इसके बाद <u>वे</u> लोग दिन भर पणजी देखते रहे।

(2) (i) **निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए।** **1**

धीरे-धीरे : क्रियाविशेषण अव्यय

(ii) **निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** **1**

वाक्य - मैं उसके लिए किताब लाई।

(3) **काल परिवर्तन कीजिए।**

(i) सातों तारे मंद पड़ जा रहे हैं। **1**

(ii) अली घर से बाहर चला गया। **1**

(4) **तालिका पूर्ण लिखिए ।** **2**

संधि	संधि-विच्छेद	भेद
अनासक्त	अन् + आसक्त	स्वर संधि
स्वागत	सु + आगत	स्वर संधि

(5) (i) **रचना के आधार पर निम्न वाक्य के भेद पहचानिए।** **1**

वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली। (संयुक्त वाक्य)

(ii) **सूचना के अनुसार निम्न वाक्य का प्रकार बदलिए** **1**

ओह! गाय ने दूध देना बंद कर दिया।

(6) (i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए।** **1**

सीना तानकर खड़े रहना : तैयार हो जाना

वाक्य: दुश्मन के साथ लड़ने के लिए भारतीय सैनिक **सीना तानकर खड़े हो गए।**

(ii) **निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए।** **1**

सिरचन को बुलाओ, **दुम हिलाता हुआ** हाजिर हो जाएगा।

(7) **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए।**

(i) कन्हैयालाल मिश्र जी बिड़ला की पुस्तक पढ़ने लगे। **1**

(ii) डॉ. महादेव साहा ने बाजार से नई पुस्तक खरीदी। **1**

(8) **निम्न वाक्यों में से मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए।** **1**

मुख्य क्रिया - आना सहायक क्रिया - पहुँची (पहुँचना)

(9) **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।** **1**

अ.क्र	क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(i)	नहाना	नहलाना	नहलवाना
(ii)	खेलना	खिलाना	खिलवाना

(10)	**निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुन: लिखिए।** मँझली भाभी मुट्ठी भर बुँदियाँ सूप में फेंककर चली गई।	1
(11)	**निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए और कारक का नाम लिखिए।** हमारे शहर **में** एक कवि है। **में** - अधिकरण कारक	1
	विभाग 5 - रचना विभाग	
उ.5. (अ) (i)	दिनांक - ५ मार्च, २०१८ सेवा में, श्रीमान कोतवाल साहब, शहर विभाग, कोल्हापुर। **विषय** : सार्वजनिक गणेशोत्सव के समय ध्वनि प्रदूषण हेतु शिकायत पत्र। माननीय महोदय, मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। इस पत्र द्वारा मैं रिकॉर्ड बजने के कारण अध्ययन में पड़नेवाली बाधा की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। शहर में आजकल चारों तरफ गणेशोत्सव की धूम है। दिन-रात शहर में रिकार्ड बज रहे हैं। परीक्षा करीब है और पढ़ाई ठीक से नहीं हो पा रही है। आवाज़ इतनी तेज रहती है कि पढ़ने में मन नहीं लगता है। हम कई बार रिकार्ड बजानेवालों से शिकायत कर चुके हैं लेकिन उन्होंने हमारी बात पर ध्यान नहीं दिया। रिकार्ड बजाने की समय-सीमा निर्धारित होनी चाहिए, ताकि हम शांतिपूर्ण ढंग से अध्ययन कर सकें। अत: आपसे प्रार्थना है कि विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उचित कार्यवाही करने की कृपा करें। कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। धन्यवाद! भवदीय, करन वेद। नाम : करन वेद पता : बगीचा बिल्डिंग, कोल्हापुर। ई-मेल आईडी : karan123@gmail.com	5

	अथवा	
(ii)	दिनांक - २७ अप्रैल, २०१८ प्रिय विजय मधुर स्मृति! बहुत-बहुत बधाई हो! मुझे अभी-अभी तुम्हारे मित्र नीरज का टेलिफोन संदेश मिला। पता चला कि तुमने इस वर्ष नौंवी कक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अगले वर्ष तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा होनी है। आशा है, उसमें भी तुम अपने माता-पिता का नाम उज्ज्वल करोगे। अजय! मुझे इस समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई है। मन में इतनी खुशी हुई कि सारे जरूरी काम छोड़कर तुम्हें बधाई-पत्र लिख रहा हूँ। मेरी ओर से हार्दिक बधाई। ईश्वर करें तुम दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करों। मम्मी-पापा भी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं। पुन: बधाई के साथ। तुम्हारा मित्र, अजय नाम : अजय सिंह पता : अशोक नगर, वी. पी. रोड, नाशिक - ०२। ई-मेल आईडी : ajay123@gmail.com	**5**
	अथवा	
(2)	(i) दक्षिण में क्या प्रसिद्ध है? (ii) धर्मग्रंथों में कौन-सी धारा बहती है? (iii) प्राचीन ग्रंथ कौन-से हैं? (iv) किन संतों के पद गाए जाते हैं? (v) सारा देश किन पर गर्व करता है?	
उ.6.		
(1)	**वृत्तांत लेखन ।** दिनांक २५ जनवरी, २०१८ : मुंबई : इस दिन नूतन विद्यालय, मुंबई में राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में रिलायंस फाउंडेशन की चेअरमैन श्रीमती नीता अंबानी जी उपस्थित थीं। सुबह ठीक ९ : ०० बजे कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। विद्यालय की विद्यार्थी प्रमुखा कुमारी अंजलि ने पुष्पगुच्छ देकर मुख्य अतिथि महोदया जी का स्वागत किया। स्कूल प्राचार्या श्रीमती लता जी ने बालिका दिवस के अवसर पर सभी छात्राओं को बधाइयाँ दी। अतिथि महोदया जी ने भी अपने वक्तव्य में बालिका दिवस का महत्त्व बताया। उन्होंने 'आज की बालिका जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति कर रही है' इस तथ्य से सभी को अवगत कराया। विद्यालय की छात्राओं ने नृत्य व नाटिका का रँगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर इस दिन की शोभा में चार-चाँद लगा दिए। कक्षा दसवीं की एक छात्रा ने अपने प्रभावपूर्ण भाषण में सभी बालिकाओं को भविष्य के लिए हार्दिक बधाई देते हुए सभी का धन्यवाद किया। इस प्रकार सुबह ११ बजे कार्यक्रम का समापन हुआ	**5**

(2) निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए। **5**

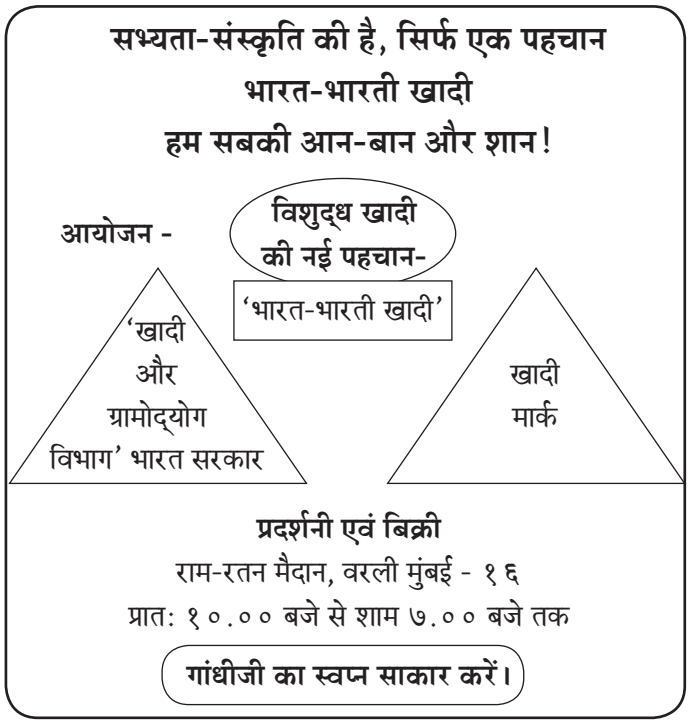

(3) **जैसी करनी वैसी भरनी** **5**

गणेशपुर नामक गाँव में एक किसान के घर एक पालतू हाथी रहता था। वह बड़ा चालाक था। वह नियमित रूप से प्रतिदिन सबेरे के समय तालाब पर पानी पीने जाता था। उस रास्ते में एक दर्जी की दुकान पड़ती थी। वह रोज उसे खाने के लिए फल देता था। हाथी इस उपकार का बदला चुकाने के लिये तालाब से लौटते समय दर्जी को एक कमल का फूल देता था। इस प्रकार दोनों में गहरी दोस्ती हो गई।

एक दिन दर्जी ने मन में सोचा - क्यों न आज हाथी के साथ मजाक करूँ। जब हाथी प्रतिदिन के नियमानुसार फल लेने आया, तो दर्जी ने फल के बदले हाथी की सूँड में सुई चुभा दी। हाथी खून का घूँट पीकर तालाब पर चला गया। रास्ते में मन-ही-मन बदला लेने की युक्ति सोचने लगा।

तालाब से लौटते समय वह अपनी सूँड में कीचड़ भर लाया और दर्जी की दुकान में डाल दिया। दुकान में रखे सारे नए कपड़े खराब हो गए दर्जी अपनी करतूत से हुई हानि देखकर पछताने लगा।

सीख: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि जैसा बीज बोओगे, वैसा फल पाओगे।

(4)(i) **जल है तो कल है।** **7**

जल ही जीवन है। जल मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। अन्न के बिना व्यक्ति १५ से ३० दिनों तक जीवित रह सकता है लेकिन जल के बिना व्यक्ति ३ से ४ दिन से ज्यादा जीवित नहीं रह सकता। जल के बिना धरती पर मानवीय जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।

प्रकृति एवं प्राणियों को भी जीवन जीने के लिए जल की आवश्यकता होती है। खेती, उद्योग आदि के लिए भी जल की आवश्यकता होती है। घर बनाने से लेकर मोटर गाड़ी चलाने तक सभी चीजों में जल

की आवश्यक होती है। वर्तमान युग में जनसंख्या वृद्धि बहुत तेज गति से हो रही है। धरती पर प्रदूषण बढ़ रहा है। जल के प्राकृतिक स्त्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। पानी की मात्रा में कमी हो रही है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन लोगों को पीने के लिए पानी भी नहीं मिलेगा। इससे लोगों का जीवन संकट में पड़ जाएगा। देश के कई भागों में ठीक से वर्षा नहीं हो रही है। इस कारण अकाल की स्थिति निर्माण होती है। ऐसे में खेती के लिए जरूरी पानी नहीं मिल पाता और इससे फसल की उपज काफी कम होती है। इस कारण अनाज के दामों में वृद्धि हो रही है।

जल है तो कल है। जल के कारण लोग घर का सारा काम कर सकते हैं। खाना बना सकते हैं और कपड़े धो सकते हैं। स्नान कर सकते हैं और पेड़-पौधों को पानी दे सकते हैं। अगर जल को यूँ ही बर्बाद किया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब पीने के पानी के लिए लोग आपस में लड़ेंगे। यदि पानी की कमी हुई तो वह काफी महँगे दामों में बिकेगा।

ध्यान रहे कि जल व्यक्ति-जीवन के प्रत्येक पल में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए उसकी बचत करना बहुत ही आवश्यक है।

(ii) **विज्ञान के चमत्कार** **7**

विज्ञान वह व्यवस्थित ज्ञान है; जो विचार, अवलोकन, अध्ययन और प्रयोग से मिलता है। विज्ञान यानी किसी भी विषय का क्रमबद्ध ज्ञान। आज का हमारा युग विज्ञान का युग है। आज चारों ओर विज्ञान का बोलबाला है। छोटी सुई से लेकर हवाई जहाज तक सारी चीजें विज्ञान की ही देन हैं। विज्ञान के कारण मनुष्य का जीवन सुखकर एवं खुशहाल हो गया है।

विज्ञान के चमत्कारों की यदि बात करें तो चारों और व्याप्त सारी चीजें विज्ञान की ही देन हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जैसे कि विद्या, उद्योग, अनुसंधान, तकनीकी, संदेश वहन, यातायात, कंप्यूटर, चिकित्सा आदि में विज्ञान ही विज्ञान दिखाई देता है। आखिर, सच ही कहा गया है 'जय विज्ञान।'

विद्युत विज्ञान का ही अद्भुत वरदान है। इसने इंसान के जीवन से अंधकार मिटा दिया है। अंतरिक्ष विज्ञान में हुई प्रगति के कारण मनुष्य चाँद पर जा पहुंचा है। अब वह मंगल पर जाने की तैयारी कर रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने सफलता हासिल कर ली है। अब असाध्य से असाध्य रोगों का भी निदान आसान हो गया है। हृदय प्रत्यारोपण एवं नेत्र प्रत्यारोपण आसानी से होने लगे हैं। कैंसर जैसी भयानक बीमारी का इलाज आसान हो गया है। आज विज्ञान ने अंधे को आँखें दी हैं, बहरे को कान दिए हैं, गूँगे को वाणी दी है, दिव्यांग को शारीरिक अवयव दिए हैं। विज्ञान के कारण नाभिकीय ऊर्जा का उत्पादन बढ़ने लगा है। इस ऊर्जा का सकारात्मक कामों के लिए उपयोग हो रहा है। विज्ञान के कारण यातायात के साधन सुलभ हो गए हैं। आज हम कुछ घंटों में अमरीका जा सकते हैं। संदेश वहन के साधनों में भी प्रगति हो गई है। मोबाइल, फेसबुक, गूगल आदि ने संपूर्ण दुनिया को एक-दूसरे के करीब लाकर रख दिया है। आज हमारा देश विज्ञान के कारण कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो गया है। विज्ञान का और एक बड़ा चमत्कार है 'मुद्रण यंत्रों का आविष्कार।' मुद्रण यंत्रों के आविष्कार ने पुस्तकों का निर्माण किया है। इस कारण ज्ञान का चारों ओर प्रचार व प्रसार हुआ है। हमारे दैनंदिन जीवन में भोजन पकाने से लेकर अन्य सारी सुख-सुविधाओं का निर्माण विज्ञान के कारण ही सुलभ हुआ है। इसलिए आज विज्ञान कामधेनु गाय की तरह मनुष्य की सारी इच्छाएँ पूर्ण कर रहा है। सच ही कहा गया है -

आज की दुनिया विचित्र नवीन
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।
हैं बँधे नर के करों में वारि-विद्युत-भाप
हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।
है नहीं बाकी कहीं व्यवधान
लाँघ सकता नर सरित-गिरि-सिंधु एक समान।

❖❖❖